P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बिहार में कृषि आधारित उद्योग की संभावना

सारांश

कृषि बिहार के आर्थिक तंत्र की पहचान है।जिसकी परिचालनीय क्रियाविधि की बुनियाद सदियों से स्थापित भूमि–मानव संबंध में रही है। बिहार की कृषि प्रदेश की आर्थिक विरासत की प्रतीक है। वर्तमान बिहार मूलतः कृषि प्रधान राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। कृष्योत्पादन में विविधता एवं वांछित गुणवत्ता के अनुरूप कृषि पर आधारित विविध वर्ग के उद्योगों की उत्पत्ति एवं प्रगति यहां की स्वाभाविक परंपरा रही है। पर जो कृष्योत्पादन आधारित उद्योग का विकास होना चाहिए वह नहीं हो सका है। जिस कारण बेरोजगारी गरीबी प्रमुख समस्या रही है।

कृषि पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के उद्देश्य से कृषि आधारित उद्योगों के विकास से ग्रामीण सुदृढ़ता आएगी और विभिन्न क्षेत्रों में विकास संभव हो सकेगा साथ ही मजदूरों का पलायन भी रूकेगा। इसलिए कृषि आधारित उद्योग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

कृषि के अन्तर्गत उगाये जाने वाले फसलों को वैज्ञानिक खेती के विकास से कृषि आधारित उद्योग धंधों की शुरूआत से बिहार के बेरोजगार लोगों को रोजगार मिलेगा।

मुख्य शब्द : आर्थिक, कृषि, उद्योग, बेरोजगारी, विकास।

नवीन कुमार
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
ल0ना0मि0विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

प्रस्तावना

कृषि के अन्तर्गत धान, गेहूं, मकई, ईख, तेलहन, तम्बाकू तथा उद्यान फसल जैसे फल, फूल, शाक–सब्जी, मसाले, कन्दमूल तथा औषधीय एवं सुगंधित पौधे वृहत मात्रा में उपजाये जाते हैं। इनकी वैज्ञानिक खेती करने तथा इन पर आधारित उद्योग धंधों की शुरूआत होने से लाखों बेरोजगार लोगों को रोजगार मिल सकता है जिससे बिहार के युवा श्रमिक अपने ही राज्य में जीविकोपार्जन अच्छी प्रकार कर सकते हैं।

तथ्य विश्लेषण

पौध प्रसारण (प्रोपेगेशन) उद्योगः आम, लीची, अमरूद, नींबू, अनार, कटहल आदि फलों के उन्नत किस्मों के कलम की मांग दिनों–दिन बिहार में बढ़ती जा रही है। लोगों का झुकाव बागवानी की तरफ बढ़ता जा रहा है जिसके लिए उन्नत प्रभेद के पौधों की नितान्त आवश्यकता है। यदि फल पौधों के प्रोपेगेशन का लघु उद्योग प्रारभ किया जाय तो इससे अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है तथा अनेक लोगों का जीविकोपार्जन हो सकता है। आवश्यकता इस बात की होगी कि सर्वप्रथम उन्नत किस्मों के पौधों की खरीदारी किसी कृषि विश्वविद्यालय या अनुसंधान संस्थानों से उनके मातृ पोधे लगा लिये जायें तथा बड़े होने पर उनसे वैज्ञानिक की देख–रेख में कलम तैयार की जाय। इस संदर्भ में राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय की भूमिका सराहनीय है क्योंकि इस विश्वविद्यालय में समय–समय पर पौधा प्रसारण तथा नर्सरी उद्योग पर अनेक युवकों को प्रशिक्षण दिया जाता हैं

आम का क्षेत्रफल इस राज्य में कोषी, दरभंगा, भागलपुर तथा तिरहुत प्रमंडल में सर्वाधिक हो रहा है जहां आम पर आधारित पौध नर्सरी का रोजगार किया जा सकता है। परन्तु लीची के लिए मुजफ्फरपुर, पूर्वी चम्पारण, वैषाली एवं समस्तीपुर जिले अधिक उपयुक्त हैं। यहां इस फल का क्षेत्रफल अधिकतम है।

फल तथा सब्जी का परिरक्षण एवं प्रसंस्करण उद्योगः बिहार में आम, लीची, अमरूद, कटहल, नींबू, बेल, अनानास जैसे फलों की पैदावार प्रचुर मात्रा में होती है। इनके पकने के समय में बाजारों में अधिक फल बाजार में आ जाने से इनका भाव गिर जाता है तथा उत्पादकों को अच्छी राशि उपलब्ध नहीं होती। अब गांवों का शहर से संपर्क बढ़ने के कारण लोगों को संरक्षित पदार्थ खाने की भी आदत बढ़ती जा रही है। फलों तथा सब्जियों का परिरक्षण तथा प्रसंस्करण करने का उद्योग लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। आजकल इस उद्योग के लिए

राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड भी ऋुण मुहैया करा रही है। कुछ विशेष लोग इसका लाभ अवश्य उठा रहे हैं लेकिन बिहार राज्य में निम्नलिखित फल एवं सब्जियों का प्रसंस्करित (प्रोसेस्ड) पदार्थ बनाने का उद्योग बड़े पैमाने पर लगाया जा सकता है।

फल	**संभावित परिरक्षित (प्रोसेस्ड) पदार्थ**
आम	अमचुर, आचार, हरा आम का शर्बत, पका आम का शर्बत, जैम, डिब्बा–बन्दी अमावट (केक) आदि।
लीची	लीची शर्बत, लीची सुखौता, डिब्बा बन्दी आदि।
अमरूद	जेली, शर्बत, अमरूद बीज
नींबू	शर्बत, अचार, कॉरडियल
अनानास	शर्बत, जैम, डिब्बा–बन्दी
आंवला	मुरब्बा, अचार, त्रिफला
केला	चिप्स, पाउडर, रंग एवं रस्सी
मखाना	लावा बनाना
सब्जी	
आलू	चिप्स
गोभी	अचार, सुखौता
टमाटर	केटचप, सॉस, जूस
हरा मटर	सुखौता, डिब्बा बन्दी
हरा साग	सुखौता
हल्दी	सोंठ, सुखौता
लाल मिर्च	अचार, पाउडर
हरी मिर्च	अचार, पाउडर
लहसुन	पाउडर, पर्ल
सिंघाड़ा	सुखौता, आटा

फसलों पर आधारित लघु उद्योग

बिहार राज्य में मसाला फसल जैसे–मिर्च, धनिया, हल्दी, सौंफ, अजमाइन, मेथी आदि की खेती बड़े पैमाने पर होती है। इन पर आधारित निम्नलिखित उद्योग बिहार में लगाये जा सकते हैं।

मसाला चूर्ण उद्योग

आजकल मसाला चूर्ण का प्रचलन बढ़ रहा है तथा समय के अभाव में प्रत्येक गृहिणी मसाला चूर्ण का ही उपयोग दाल, साग, सब्जी तथा अन्य प्रकार के भोजन–सामग्री में करती हैं। मिर्च, धनिया तथा हल्दी का चूर्ण बनाने का उद्योग घरेलू तथा बड़े पैमाने पर लगाया जा सकता है। इसमें लाभांष की मात्रा अन्य उद्योग की अपेक्षा अधिक होगी। विभिन्न मसालों को अलग से मिश्रित कर करी पाउडर बनाने का उद्योग मुजफ्फरपुर तथा दरभंगा प्रमंडल में सफलतापूर्वक किया जा सकता है। विभिन्न मसालों के अर्क की मांग विदेशों में तेजी से बढ़ती जा रही है। अतः हल्दी, अदरक, धनिया, सौंफ, अजवाइन, मेथी इत्यादि बिहार में उपजने वाले मसालों का अर्क उद्योग सफलतापूर्वक लगाया जा सकता है। इसका भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है।

औषधीय तथा सुगन्धित पौधों पर आधारित उद्योग

विभिन्न प्रकार के औषधियों में तथा प्रसाधन की वस्तुओं के निर्माण में औषधीय तथा सुगंधित पौधों के तेल, सेंट, रस, पाउडर आदि की मांग बहुत ही प्रबल हो गयी है। इनकी खेती बिहार राज्य में शुरू हो चुकी है परन्तु किसानों के सामने तेल निकालने की समस्या इनकी खेती में बाधा बनी हुई है। यदि जगह–जगह पर तेल निकालने वाले संयंत्रों को रोजगार के रूप में लगाया जाये तो काफी आमदनी प्राप्त हो सकती है। सुगंधित पौधों में पुदीना, खस, लेमन–ग्रास, गुलाब, रजनी–गंधा, बेला, चमेली आदि मुख्य हैं जबकि औषधीय पौधों में सर्प गंधा, रतनज्योति, सतावर, घृतकुमारी आदि अनेक फसल हैं जिनकी खेती करके अधिक आमदनी प्राप्त की जा सकती है। इन फसलों की आप ऊंची–नीची तथा कम उपजाऊ वाले भूमि में भी लगा सकते हैं।

पुष्प (फूल) पर आधारित उद्योग

कटे फूल (कट फ्लावर) का उद्योग

आजकल के भौतिक युग में तथा शहरीकरण के बहुलता होने के कारण लोगों का सम्पर्क पेड़–पौधों से समाप्त होता जा रहा है परन्तु इसका सूक्ष्म रूप सामने उठकर जो आया है यह फूलों द्वारा घर की सजावट है। बहुमंजिली इमारतों में रहने वाले लोगों को कटे फूल का षौक अधिक बढ़ गया है जिससे इस उद्योग की संभावना अधिक हो गया है। कटे फूलों में गुलाब, रजनीगंधा, ग्लेडियोलस, गुलदावदी, डहलिया आदि के एक कटे फूल का मूल्य 10 रू. से 25 रू. तक प्राप्त हो जाता है। यदि इसकी अच्छी प्रकार पैकिंग आदि की व्यवस्था कर दी जाय तो मूल्य और भी बढ़ जाता है। इन दिनों भारत में करोड़ों रूपये मूल्य के कटे फूल विदेशों से भेजे जाते हैं। विश्व में सबसे अधिक हालैंड कटे फूलों का निर्यात करता है। माला तथा बुके उद्योग विशेषकर फूलों पर आधारित घरेलू उद्योग हैं जिसमें बिहार की महिलाएं, बच्चे तथा बुजुर्ग भी भाग ले सकते हैं। इसमें थोड़ा समय देकर फूलों से विभिन्न किस्म के माला तथा बुके बनाकर अधिक लाभार्जन किया जा सकता है। यह छोटे किस्म का उद्योग बड़े–बड़े शहरों में अधिक लाभप्रद है। यहां गेंदा जैसे फूलों की कीमत 20 से 20 रू. प्रति किलो मिल जाती है। केवड़ा, गुलाब, वैजन्ती, मोगरा, बेला, चम्पा, रजनीगंधा आदि के सुगन्धित तेल तथा इत्र उद्योग आसानी से इन फसलों के क्षेत्रों में उगाया जा सकता है। आजकल प्रसाधन सामग्रियों में महिलाओं का झुकाव अधिक होने के कारण इस उद्योग का भविष्य अधिक उज्ज्वल है। देशी गुलाब की पंखुड़ियों को चीनी के साथ मिलाकर उच्च कोटि का गुलकन्द बनाकर बेचा जा सकता है जिससे लागत एक तथा लाभ चौगुणा हो सकता है। इसे बेरोजगार ग्रामीण युवक तथा युवतियां रोजगार के रूप में अपना सकते हैं। इसमें किसी प्रकार की औजार की आवश्यकता भी नहीं है। इसे शीशे के जारों में भरकर बेचा जा सकता है। इसकी बनाने की विधि भी अत्यंत सरल है।

खाद्यान्न आधारित उद्योग

मकई/मक्का अनाज के साथ उद्योग में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। किसी भी अनाज की तुलना में यह मनुष्य के खाद्यान्न के अलावा पशु आहार और सैंकड़ों प्रकार के उद्योग में काम आता है। इसके दाने डंठल, पत्तियां, नेड़हा, धनवाल और मोचा सभी का व्यावहारिक महत्व है। अमेरिका में तो इसकाप कई रूप में उपयोग किया जाता है। इससे अनेकों प्रकार की वस्तुएं बनाकर

बाजारों में बेची जाती है। इस देश में मकई की बढ़ती हुई उत्पादन को बनाये रखने के लिए, साथ ही इस अनाज की कीमत में स्थिरता लाने के लिए आवश्यक है कि उद्योग में इसका उपयोग किया जाय। बिहार राज्य में लगभग 6 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में 17 लाख टन मकई का उत्पादन लिया जाता है। इसकी खेती मुख्य रूप से 18 जिलों में की जाती है। मक्का के क्षेत्रफल, उत्पादन एवं इस पर आधारित उद्योग को कच्चे माल की प्राप्ति की सुविधाओं के मद्देनजर, इन जिलों में मक्का आधारित उद्योग लगाये जा सकते हैं। मकई का उपयोग मुख्य रूप से स्टार्च उद्योग में अपने देश में हो रहा है। मकई के दाने से 66 से 75 प्रतिशत स्टार्च प्राप्त होता है। यह स्टार्च अन्य प्रकार के उपयोगी उद्योगों में काम आती है। जैसे–कपड़ा उद्योग, खाने का तेल, फ्लैक्स, बिस्कुट, केक, सुज्जी, पॉप कार्न आदि मक्के से बड़े पैमाने पर बनाये जा सकते हैं। यह पशु आहार को पौष्टिक बना देता है। पशु का वजन बढ़ता है और दूध देने की क्षमता भी अधिक कर देता है। मुर्गी चारा का यह मुख्य अंग है। इसके प्रयोग से मुर्गियों का वजन बढ़ जाता है और अंडा भी अधिक होता है। पीले दाने वाली मकई मुर्गी चारा के लिए विशेष रूप से महत्व रखती है। मकई के दाने से शराब बनाने का उद्योग भी चलता है। मक्का द्वारा जीवन रक्षा दवा डेक्सट्रोज का उत्पादन किया जाता है। साथ ही एन्टीबायोटिक दवाओं, जैसे पेनिसिलीन के उत्पादन में इसका उपयोग आधार के रूप में किया जाता है। अन्य दवायें, जैसे विटामिन सी. ग्लूकोज तथा डेक्सटोज पाउडर भी इससे बनाया जाता है। मक्का द्वारा विशेष प्रकार के चिकने, चमकीले उत्तम कोटि के कागजों का निर्माण किया जाता है। सिगरेट उद्योग के लिए महीन–बारीक तथा कम धुआं देने वाला कागज भी तैयार किया जाता है। मक्का के डंठल तथा अन्य भागों के द्वारा दफती (कूट) तथा मोटे कागजों का निर्माण किया जाता है। सौंदर्य प्रसाधन एवं अन्य प्रकार के उद्योग में मक्का आधार के रूप में उपयोगी होता है। इसके द्वारा प्राप्त रासायनिक उत्पादन चिकने और न चिपकने वाले होने के कारण बड़े ही उपयोगी होते हैं।

इन सब उपयोगों के अलावे मक्का द्वारा प्राप्त द्रव्य सिगरेट के तम्बाकू में सुगंध लाने के लिए उपयोग में लाया जाता है साथ ही इससे प्राप्त जीवाणुओं (इन्जाईम) को चमड़ा उद्योग में उपयोग किया जाता है। मक्का द्वारा प्राप्त द्रव्य उत्पोत्पाद का व्यहार टार्च सेल के निर्माण में किया जाता है। कुटीर उद्योग में सीधे वाल के छिलके (बकलौवा) द्वारा रस्सी बनाया जाता है। नेहड़ा से सिगरेट पाइप बनाये जा सकते हैं और इनके राख को कपड़ा धोने वाले साबुन और कीड़ों को भगाने वाले दवाओं में मुख्य रूप से इस्तेमाल किया जाता हैं

धान, गेहूं, तेलहन आधारित उद्योगों की भी आवश्यकता है जिससे कि इन फसलों की खेती से लोगों को अधिक मुनाफा प्राप्त हो तथा इनके आधारित वस्तुओं का उपयोग बढ़ सके। मखाना, मशरूम, मधुमक्खी पालन, रेशम उत्पादन, मुर्गीपालन, डेयरी, दूध आधारित प्रोडक्ट्स तो उद्योगीकरण को एक लम्बी छलांग दे सकते हैं।

चीनी एवं जूट उद्योग

बिहार में कुल 28 चीनी मिल है जिसमें मात्र 9 चीनी मिल चालू है। अधिकांश जर्जर स्थिति में है। चीनी उद्योग को बचाने का अब एक रास्ता है कि सारे रूग्न चीनी मिलों को निजी क्षेत्र में दे दिया जाय। चीनी उद्योग को जीवित करना बहुत जरूरी है क्योंकि इस उद्योग से ईख उत्पादक तथा कुशल और अकुशल मजदूरों का भविष्य जुडा है। बिहार में जूट की खेती पूर्णिया, अररिया, कटिहार, सहरसा, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर आदि जिलों में होती है तथा जूट भदई फसल के रूप में ली जाती है। जूट की कटाई के बाद नीची भूमि में धान की फसल ली जाती है। दुर्भाग्यवश, राज्य में जूट उद्योग मृतप्राय है। अतः कृषक जूट की खेती में कम रूचि लेने लगे हैं अतः आवश्यकता है कि पूर्णिया, कटिहार, दरभंगा तथा मधुबनी जिले में निजी क्षेत्र में जूट मिल की स्थापना हो तथा बन्द पड़े जूट मिल को सक्रिय बनाया जाय।

निष्कर्ष

बिहार में टिस्सूकल्चर, वर्मीकल्चर तथा बायापेस्टीसाईड, बायोफर्टिलाईजर आदि बड़े पैमाने पर उद्योग के रूप में बनाने की भी आवश्यकता है जिससे कि अधिक से अधिक किसानों को समय पार ये मिल सकें जिससे कि कृषि को टिकाऊ बनाया जा सके एवं वायुमंडल को दूषित होने से बचाया जा सके।

अतः यह स्पष्ट है कि कृषि को बिहार में व्यवसायोन्मुखी एवं उद्योगोन्मुखी बनाने की सुविधाएं अत्यधिक है तथा इस दिशा में बड़े पैमाने पर उद्योग स्थापना की गुंजाइश है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. *कुरूक्षेत्रः मासिक अंक 8 जून 2018 पृष्ट–15 से 20*
2. *Publication division.nic.in 21 to 24*
3. *डॉ0 नदेश्वर शर्मा– वसुन्धरा प्रकाशन*
4. *बिहार का भूगोल–स्वामी शरण एवं दीपा शरण*
5. *कुरूक्षेत्रः मासिक पत्रिका–अक्टूबर 2015*
6. *अवधेश झा–स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0 लि0–पृष्ठ 145 से 150*